ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

इतिहास की व्यापकता और अवधारणा मानचित्रण की वस्तुनिश्ठता–एक अद्भुद संगम

KEY WORDS: इतिहास, व्यिापकता, शिक्षण विधि, अवधारणा मानचित्रण, रोचकता, 21वीं सदी के छात्र, वस्तुनिश्ठता।

Dr Anamika Chauhan

Assistant Professor, School of Education, Galgotias University

ABSTRACT

इतिहास का विषय कक्षा 6 से सामाजिक विज्ञान के अंग के रूप में विद्यालयी पाठ्यक्रम का अंग बनता है और कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक अधिकतर छात्र इस विषय को पढ़ते नहीं ढोते हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य इस समस्या के कारणों को सूचीबद्ध करते हुए, इस विशय का षिक्षण हेतु अवधारणा मानचित्रण की षिक्षण विधि का प्रयोग व उसकी प्रभाव ीलता स्थापित करना है।अवधारणा मानचित्रण शिक्षण विधि सुनियोजित व सुव्यवस्थित होने के साथ–साथ रोचक भी है, जो कि 21वीं, सदी के छात्रों की रूचि के अनुकूल है। इसी कारण इस शिक्षण विधि का उपयोग बोझिल से बोझिल व व्यापक से व्यापक विशय को भी ववस्तुनिश्ठता का गुण प्रदान करता है।

इतिहास का महत्व

छात्रों के सर्वांगीण विकास में एक अंग के रूप में इतिहास का विषय महत्वपूर्ण है। यह विषय छात्रों को उनके उद्भव, विकास, संस्कृति, सभ्यता आदि से परिचित करवाता है। यदि सही से पढ़ाया जाए तो यह विषय किसी विशिष्ट समय, स्थान, काल, कला, साहित्य, दर्शन, कानून, भाषा, अर्थशास्त्र, वास्तुकला, सामाजिक–राजनैतिक जीवन इत्यादि को व्यक्ति विषेश के वर्तमान से जोडता है और साथ ही साथ वर्तमान के लिए संदर्भ भी प्रस्तुत करता है **(voss, 1998)** ।

मार्तिक (2001) कहते हैं कि केवल इतिहास ही समाज की स्वयं से पहचान करवाता है व साथ ही साथ आज देश व समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता एक जिम्मेंदार नागरिक होने का महत्व सिखाने और छात्रों में समस्या समाधान का काशल विकसित करने का **(Bradley commisiion of History in Schools 1988)** कार्य भी करता है। यह विषय व्यक्ति को मानवीय अनुभवों की सार्वभौतिकता के साथ–साथ उन विशिष्टताओं के प्रति भी संवेदनशील बनाता है जो कि संस्कृतियों व समाज को एक दूसरे से अलग करते हैं **(Daniels, 1981; Voss 1988)** ।

अतः इतिहास का ज्ञान छात्रों में एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता, गरिमा व समन्वयता की भावना जगाने में सहायक होता है और उनमें बहुसांस्कृतिक समाज में रहने का आचरण व व्यवहार भी विकसित करता है।

इतिहास के अलोकप्रिय होने के कारण

छात्रों में इतिहास के विषय की अलोकप्रियता के कारण **(Stephen Joseph, 2011)** हैं –

1– अत्याधिक विशयनिष्ठता व व्यापक होने के कारण।
2– बोझिल व विवरणयुक्त होने के कारण।
3– समकालीन जीवन में अप्रासंगिक लगता है छात्रों को।
4– व्याख्यान विधि ले पढाए जाने के कारण शिक्षक केन्द्रित है।
5– विषय को समझना व अवधारणाओं में स्पष्टता लाना अत्याधिक कठिन कार्य है इत्यादि।

शोध विधि

शोधकर्ता ने इतिहास के एक पाठ **नदी घाटी शभ्यताएँ – मिश्र व हड़प्पा की सभ्यता** को दिल्ली प्रदेश के एक सरकारी विद्यालय में कक्षा 9 के छात्रों को पढ़ायां विद्यालय में कक्षा 9 के 106 छात्र थे जिनमें से शोधकर्ता ने लॉटरी विधि से दो समूह बनाए। शोधकर्ता ने दोनों समूहो को –नियंत्रित व प्रायोगिक समूह में बाँटकर, नियंत्रित समूह को प्रचलित शिक्षण विधि द्वारा व प्रायोगिक समूह को अवधारणा मानचित्रण शिक्षण विधि द्वारा पढ़ाया।

शोधकर्ता ने **प्रायोगिक समूह** के 53 छात्रों को पहले से विकसित किए गए अवधारणा मानचित्रण से न पढ़ाकर शोधकर्ता ने छात्रों के सहयोग ही इस अवधारणा मानचित्रण का निर्माण किया जिससे दो लाभ हुए– एक तो छात्रों में नदी घाटी सभ्यता की स्पष्ट समझ विकसित हुई व दूसरा छात्रों को यह भी पता चल कि किस प्रकार किसी भी विषय को अवधारणा मानचित्रण में बदल सकते हैं। **नियंत्रित समूह** के 53 छात्रों को शोधकर्ता ने प्रचलित शिक्षण विधि, मानचित्र व चित्रों की सहायता से इस अवधारणा को छात्रों का पढ़ाया ।

नदी घाटी सभ्यता का अवधारणा मानचित्रण

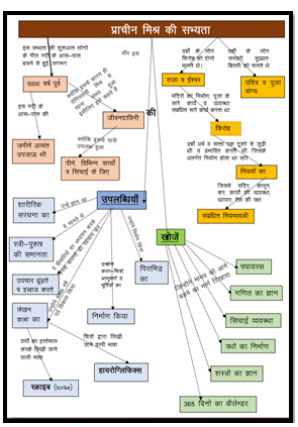

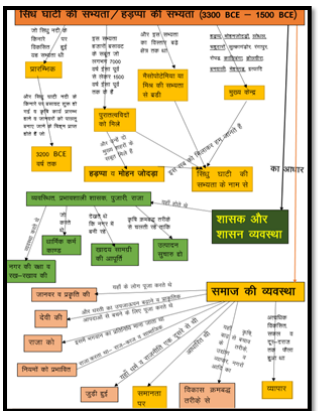

Source: Chauhan. A., 2019 Unpublished

शोधकर्ता ने 10 घंटों की कक्षाएं प्रत्येक समूह के साथ लेने के बाद दोनों का परीक्षण किया अैर प्राप्त परिणाम इस प्रकार से है–

बार ग्राफः नदी घाटी सभ्यता– परीक्षण के तुलनात्मक आँकड़े

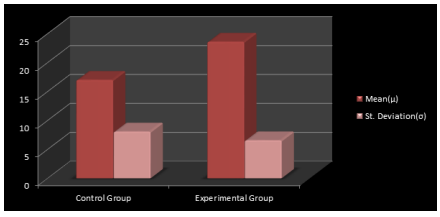

तालिकाः नदी घाटी सभ्यता– परीक्षण के तुलनात्मक आँकड़े

Descriptive Statistics	Control Group	Experimental Group
Mean (μ)	17	23.6
St. Deviation (σ)	8.07	6.56

उपरोक्त दर्शित तालिका के अनुसार नियंत्रित समूह के प्राप्तांको का औसत 17 व मानक विचलन 8.07 है जबकि प्रायोगिक समूह के छात्रों के प्राप्तांको का औसत 23.6 व मानक विचलन 6.56 है।

प्राप्त परिणाम स्पष्ट करते है कि इतिहास के विशय में छात्रों की अस्पष्टता को दूर करने में अवधारणा मानचित्रण का प्रयोग शफल है साथ ही साथ यह विधि इतिहास जैसे अत्याधिक विषयनिश्ठ व व्यापक विषय में सफल प्रयोग के द्वारा अन्य विषयों में सफल प्रयोग के द्वार खोलती है।

REFERENCES

1. AKENG N, Hamza (2018). A Study of Students' Opinions about History Subjects in the Social Studies Curriculum: Journal of Literature and Art Studies, October 2017, Vol. 7, No. 10, 1347-1353.
2. Chauhan, Anamika (2019). A Study of Effect of Concept Mapping on Understanding Social Science Concepts at Elementary Level. PhD. Education. Jamia Millia Islamia. (Unpublished)
3. Joseph, Stephen (2011). What Are Upper Secondary School Students Saying About History: Caribbean Curriculum Vol. 18, 2011, 1–26.
4. YILMAZ, Kaya (2008). A Vision of History Teaching and Learning: Thoughts on History Education in Secondary Schools. The High School Journal. January 2008 DOI: 10.1353/hsj.0.0017